L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - III
B.A PAPER - II
PSYCHOLOGY (Honours)
SOCIAL PSYCHOLOGY

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor
Guest - Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com.

TOPIC - Meaning and Nature of leadership.

नेतृत्व एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है। जो मनुष्यों एवं पशुओं दोनों के समाज में पायी जाती है। अगर किसी से यह पूछा जाये कि किसी अमुक समूह का नेता कौन है। तो उस व्यक्ति की सीधी एवं स्पष्ट उत्तर यही होगा कि उस समूह का नेता वही है। जिसका सदस्यों द्वारा अनुसरण (Follow) किया जाता है। यद्यपि यह साधारण दृष्टिकोण बहुत हद तक सही प्रतीत होता है। फिर भी मात्र इतना कह देने से नेतृत्व का कोई वैज्ञानिक व्याख्या नहीं हो पाती है। अतः यह आवश्यक है कि हम कुछ समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गयी परिभाषाओं पर गौर करें, (Lindgren 1973) के अनुसार, समूह के ऐसे सदस्य को नेता कहा जाता है। अपनी पसंद के अनुसार अन्य सदस्यों को व्यवहार करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव रखता है।

नेतृत्व वह व्यवहार है। जो अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को उससे कहीं अधिक प्रभावित करता है। जितना कि उन व्यक्तियों का व्यवहार नेता को प्रभावित करता है।

बास (Bass 1990) ने नेतृत्व को काफी विस्तृत एवं वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित किया है। नेतृत्व एक ऐसा समूह के बीच अंतः क्रिया है। जिसमें सदस्यों की प्रत्याशाओं एवं प्रत्यक्षणों तथा परिस्थितियाँ प्रायः संरचित एवं पुनर्संरचित होती रहती है। नेता को परिवर्तन का एजेंट समझा जाता है तथा वह ऐसा व्यक्ति होता है। जिसके कार्य का प्रभाव अन्य सदस्यों पर उन सदस्यों द्वारा किये गये कार्यों का उन पर

पड़ने वाले प्रभाव से अधिक होता है। नेतृत्व की उत्पत्ति तब होती है, जब समूह का एक सदस्य अन्य सदस्यों की सामर्थ्यता तथा अभिप्रेरणा को परिवर्तित करता है।

इन तीनों परिभाषाओं में काफी समानता है क्योंकि इन तीनों मनोवैज्ञानिकों ने नेता को एक ऐसे समूह के अन्य सदस्यों पर पड़ने वाले प्रभाव के रूप में परिभाषित किया है। फाइडलर (Fiedler 1967) तथा Stogdill 1948) ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त करके इन तीनों विद्वानों के मतों का समर्थन किया है। इन परिभाषाओं के विश्लेषण से नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विमा (Dimension) पर रोशनी पड़ती है। और वह यह है कि नेतृत्व में दो पक्ष होते हैं - एक नेता जो नेतृत्व करता है तथा दूसरा जो नेतृत्व को स्वीकार करते हैं अर्थात अनुयायी लोग (Followers) नेतृत्व की प्रक्रिया में ये दोनों पक्ष एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। नेता अनुयायी लोगों को प्रभावित करता है तथा अनुयायी लोग भी नेता को। अंतर सिर्फ इतना होता है कि नेता पर अनुयायियों के व्यवहारों का प्रभाव जितना पड़ता है उससे कहीं अधिक प्रभाव अनुयायियों पर नेता के व्यवहारों का पड़ता है। इसका मतलब यह हुआ कि नेता तथा अनुयायियों के बीच एकतरफा सम्बन्ध न होकर दो तरफा सम्बन्ध होता है। और इन दोनों के बीच पारस्परिक प्रभाव की मात्रा में अन्तर होता है। (Haythorne 1956) ने भी अपने अध्ययन से इस दो तरफा सम्बन्ध की पुष्टि किया है। इसे एक उदाहरण द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है। यदि कोई सेनापति अपने सिपाहियों को युद्ध करने का आदेश देता है परन्तु उन लोगों के सुझाव को ध्यान में रखते हुए यदि वह अपने आदेशों में कुछ परिमार्जन करता है तो यह नेतृत्व में दो-तरफा सम्बन्ध का परिचायक होगा, क्योंकि एक नेता पूर्ण या निरंकुश प्रभुत्व के बिना प्रभाव करता है ताकि वह अपने अनुयायियों

को तो प्रभावित कर सके परंतु सभी अनुयायियों के व्यवहार तथा बिल्कुल ही प्रभावित न हो ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अधिक समय तक नेता के पद पर बना नहीं रह सकता है। तथा उसका नेतृत्व जल्द ही समाप्त हो जाता है। अतः यह आवश्यक है कि नेता अपने अनुयायियों की प्रतिक्रियाओं को समझे तथा उसके अनुसार स्वयं भी तब व्यवहार करने की कोशिश करे। यही कारण है। कि प्रायः लोग कहते हैं कि अनुयायी ही नेता के समान ही समूह का नेतृत्व करते हैं अतः नेतृत्व की प्रभावशीलता इस तथ्य पर आधारित होती है। कि अनुयायी नेता को अपना ही समझा जाए - 1963 ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि अनुयायियों के नजरिये से नेता वही है जो लोगों की ओर तथा उनमें से अधिकतर लोगों के द्वारा समझा जाना चाहिए।

नेतृत्व के अर्थ एवं स्वरूप की व्याख्या तब तक पूरी नहीं होती है। जब तक कि नेता तथा औपचारिक अध्यक्ष के अंतर को दर्शाया जाए इस पर गिब (Gibb 1969) ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है। कि नेता को अपने अनुयायियों द्वारा स्वतः ही प्रभाव डालने का अधिकार मिल जाता है। जबकि एक औपचारिक अध्यक्ष को दूसरों पर प्रभाव डालने का अधिकार स्वतः न होकर अपने औपचारिक पद के कारण होता है। उदाहरणार्थ, एक कुलपति (vice chancellor) का प्रभाव विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्रों पर उनके पद के कारण होता है। कभी कभी यह निश्चित करना कठिन हो जाता है। कि समूह या संगठन के अन्य सदस्य एक अच्छा नेता समझकर उनका अनुसरण (Follow) करते हैं। या उनके पद की मर्यादा को ध्यान में रखकर वैसा करते हैं। तात्पर्य यह है। कि सभी औपचारिक अध्यक्ष वास्तविक नेता नहीं होते हैं। निष्कर्ष यह है। कि नेतृत्व एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसमें अंतर्वैयक्तिक अंतःक्रिया होती है। क्योंकि नेता अपने अनुयायियों पर प्रभाव डालता है। तथा अनुयायी अपने नेता पर प्रभाव डालते हैं। अंतर सिर्फ इतना होता है। नेता का प्रभाव अनुयायी के प्रभाव से

Scanned with CamScanner

अधिक होता है। अतः इन दोनों के बीच पारस्परिक प्रभाव की मात्रा में अंतर होता है। नेता अपने कई तरह के प्रभाव के कारण ही औपचारिक अध्यक्ष से भिन्न होता है।

नेतृत्व तथा प्रभुत्व दो ऐसे पद है जिनका प्रयोग बोलचाल की भाषा में लगभग समान अर्थ में ही किया जाता है। परंतु समाज मनोविज्ञान में इन दोनों के अर्थ में अंतर बतलाया गया है। जैसे कि हम पहले बतला चुके है कि नेतृत्व में नेता एवं अनुयायियों के बीच एक पारस्परिक सम्बन्ध होता है। जिसके परिणामस्वरूप अपने अनुयायियों द्वारा प्रभावित होते हुए भी नेता अपनी कुशलता एवं बुद्धि के बल पर अनुयायियों का मार्गदर्शन करता है। परंतु प्रभुत्व में ऐसी बात नहीं होती है। प्रभुत्व एक ऐसी प्रक्रिया है जो दूसरों की मनोवृति एवं क्रियाओं को प्रभावित करती है। अतः यह एक माध्यम साधन है। जिसका उपयोग एक व्यक्तियों द्वारा दूसरे व्यक्तियों की मनोवृतियों एवं क्रियाओं को नियंत्रित करने अथवा परिवर्तित करने के लिए किया जाता है।

प्रभुत्व की इस व्याख्या से यह स्पष्ट है कि नेतृत्व में जैसे दो पक्ष अर्थात नेता एवं अनुयायी होते है उसी तरह से प्रभुत्व में दो पक्ष होते है। एक व्यक्ति प्रभुता सम्पन्न होता है। तथा दूसरा उसके अधीन में रहा होता है। जिस तरह से अनुयायियों के बिना नेता नहीं हो सकता है, उसी तरह से अधीनता के बिना प्रभुत्व नहीं हो सकता है। प्रभुत्व की इस व्याख्या से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रभुत्व में सत्ता या शक्ति का तत्व होता है। जिससे प्रभुत्वशाली व्यक्ति अपने अधीन व्यक्तियों की मनोवृतियों एवं व्यवहारों को नियंत्रित करता है।

Dr. Pramod kumar sahu,
Date- 04/09/2020
Sub- Psychology

Scanned with CamScanner